प्रश्न- 'मौर्यकालीन कला साम्राज्यिक दृष्टिकोण को व्यक्त करती है।' टिप्पणी कीजिए।

(150 शब्द)

'Mauryan art' reflects the imperalistic approach. Comment.

(150 Words)

मॉडल उत्तर

उत्तर- भूमिका

- मौर्यकाल में कला का विकास राजकीय संरक्षण में हुआ तथा कला का उपयोग साम्राज्य की गरिमा व वैभव के प्रदर्शन के लिए भरपूर किया गया। इससे कला का साम्राज्यिक दृष्टिकोण स्वत: परिलक्षित होता है।

मुख्य विषय वस्तु

- विशाल सीमाक्षेत्र में विस्तृत मौर्य साम्राज्य के सीमा का निर्धारण व विस्तार की जानकारी अभिलेखों के माध्यम से मिलती है। उत्तर-पश्चिम में शाहबाजगढ़ी, मानसेहरा में शिलालेख, कालसी, रूमिंदेई तथा निगाली सागर स्तंभलेखों से सिद्ध होता है कि अशोक के साम्राज्य की सीमा हिंदुकुश से लेकर देहरादून और नेपाल की तराई क्षेत्रों तक विस्तृत थी।
- मौर्य सम्राट अपने विजय के उपरांत प्रशस्ति तथा साम्राज्य की नीतियों, आर्थिक सुदृढ़ता, राजनीतिक स्थिरता, शत्रु राज्य व उसकी जनता के मन में अपने राज्य के प्रति प्रेम भावना व आदर उत्पन्न करने के लिए बड़े-बड़े विवरण व राज-संदेश उत्कीर्ण कराये जाते थे।
- दूसरे तथा सातवें स्तंभ-लेखों में धम्म की व्याख्या तथा प्रथम शिलालेख में पशुवध के संबंध में विज्ञप्ति जारी की गई जिससे साम्राज्य की लोक कल्याणकारी छवि का संदेश प्रेषित किया जा सके।
- स्तंभ के शीर्ष पर चारों सिंहों को एक-दूसरे के पीछे पीठ कर दर्शाया जाना साम्राज्य के चारों दिशाओं में विस्तारित होने को इंगित करता है तथा स्थापत्य, राज्य अनुदान से निर्मित है, जो इसका संदेश देता है।
- हालांकि मौर्यकालीन कला के राज्य संरक्षण में पलने से नकारात्मक प्रभाव यह रहा कि मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् कला का विकास अवश्य अवरूद्ध हुआ।

अंत में संक्षिप्त निष्कर्ष दें।

नोट-

➲ प्रश्नानुसार उत्तर के सभी बिन्दुओं को समाहित किया गया है, निर्धारित शब्द सीमा में व्यवस्थित कर विश्लेषण कर सकते हैं।